श्रीवैराग्य कान्ति

मंजु छन्द

विमल विराग अदाग दाग दिल दुरित दूरि करि डारे।
राग द्वेष दुख रेष न राषत मोह मान मन मारे॥
प्रीतम प्रीति प्रकाश करे चित अनुभव वित विस्तारे।
युगलअनन्य विराग बिना बहु साधन करि पचि हारे॥ १॥
नस्वर धन तन मन दुख दायक सायक सम हिय वेधे।
सस्वर जीव करत शवहूँ ते हीन पीन गुन छेदे॥
पामरता की खान हान निधि स्याही करत सपेदे।
युगलअनन्यशरन ताते तजु भजु श्रीराम उमेदे॥ २॥
दर्व्य महा लघु अर्व खर्व जिय जर्व जलन जिन जानो।
मदिरा मोह मनोज ओज हित प्रवल कलाल पछानो॥
सीताराम नाम मंगलमय तेहि प्रतिकूल खजानो।
युगलअनन्यशरन सीमा भव विविधि वासना मानो॥ ३॥
गादुर चोर चाह चामीकर मोद हेत तम सागर है।
श्रीगुरुदत्त सुधन मूसन हित ठग अति प्रवल उजागर है॥
ग्रीषम रितु वर विरति विपिन घन बनज बोध शशि आगर है।
युगलअनन्यशरन श्रम भ्रम मग वित्त बूझिये नागर है॥ ४॥
अहंकार भव भार रोग हित कारन कुपथ कुधनही है।
वस्तु वास्तव विशद चन्द रवि राह समान सुजन ही है।

लोभ लहर की षानि वारिनिधि वित्त चित्त गुन गन ही है।
युगलअनन्य सकल औगुन भंडार खिलावत पनही है॥ ५॥
पैसा परसत पाप शीश पर चढ़त चौगुनो भारी है।
इष्ट रहस्य मिष्ट नहिं लागे जगत जीव सें यारी है॥
जहाँ तहाँ वरवाद स्वान ज्यों छन पल नाहिं करारी है।
युगलअनन्यशरन सीतापति भजन सुधन सुषकारी है॥ ६॥
ईर्षा मद मत्सर्य तर्य भय कपट कलंक कज़ाकी।
द्रोह कोह कुल कहर काम कलि कसक कुरोग गजाकी॥
ममता विविधि विषमता जनता जमता जहर जकाकी।
युगलअनन्यशरन याही विधि धन मधि औगुन ताकी॥ ७॥
नामहिं मात्र कहत याको सब लोग अर्थ विन भानें।
इह तो अखिल अनर्थ हेतु लखु व्यर्थ पचत हैरानें॥
आदि मध्य अवसान अषिल दुष षान जान जन जाने।
युगलअनन्यशरन परसतहीं प्रीतम प्रान पयाने॥ ८॥
कंज मांह ज्यों कंटक शोभित त्यौं त्यागी धन संगी।
यथा कलंक मयंक मांझ नृप मध्य अनीत कुरंगी॥
यथा सूर मधि कसर कादरी वामा दग रस भंगी।
युगलअनन्यशरन याही विधि औगुन अमित अनंगी॥ ९॥
काम कलंक कमिनी कानन आनन पीर प्रदायक है।
प्रेत पिशाच भयानन आनन मान न विनय समायक है॥
केहरि मत्त मतंग मंद गति मति रति नति यति हायक है।
युगलअनन्यशरन सत संगति केवल सहज सहायक है॥ १०॥

वाम किधौं इह काम विभव वल समुझहिं सुमति सयाने।
दरसत हरत नैन मन परसत प्रान समेत पयाने॥
अंजन मंजन फांस रास दुष डारत कठिन रिसाने।
युगलअनन्यशरन कामी नर बंधे हमेश भुलाने॥११॥
मुख सब दुष तुख खान जोहि जिय खेद करावन वारी।
बोलनि मृदु मुसक्यान दोष दावा जनु चहुं दिशि वारी॥
चितवन चोर विवेक वित्त पल रहन न पावै तारी।
युगलअनन्यशरन वामा सब भाँति अधर्म कटारी॥१२॥
मानस सरस सनेह सहित सपने मधि बाम न देखो।
प्रवल अविद्या काल निशा दुर्गारुधि राशनि पेखो॥
मोक्ष द्वार पट्ट पाट दायिनी भवन भुलावनि लेखो।
युगलअनन्यशरन दुरजन दृग सतत निरोध समेखो॥१३॥
यथा गर्त्त तृन लता आवरन सहित अधिक गुन शोभित।
परत मोह बस मृग हरि तृन तकि होत दरद द्रुम गोभित॥
ऐसेहीं ललना तन दुखमय ऊपर रंग सुलोभित।
युगलअनन्यशरन आखिर अति दुसह दोष विछोभित।१४॥
श्रीगुरु संत सनेह सियावर सुदिन समन हित वामा है।
विमुष कराय देत तीनों सन महा दोष दुष धामा है॥
याते अपर न और विघन कोउ श्रुति संवत सुचि सामा है।
युगलअनन्यशरन सुष सब विधि परसे बिन तिय जामा है॥१५॥
पंडितपन गरुवाई धन ध्वज ध्यान धारना हरनी है।
विशद विराग राग राघव गुन करन आवरन वरनी है॥

अधिक असौच अयोग अलायक कठिन नदी वैतरनी है।
युगलअनन्यशरन पापन के जनन हेत तिय धरनी है ॥१६॥
हाँस फाँस दुष राश खास पिय आस प्यास हरि लेती है।
वानी महा हलाहल सानी दुख दानी दिल देती है॥
लोक वेद विधि हीन हिरस अघ ताकी इह खर खेती है।
युगलअनन्यशरन वामा वन विषय विषम कहो केती है ॥१७॥
डरते रहो दहो मत तिय तन दरस परस के कीये ते।
गहो ज्ञान गुरु गिर गंभीर वर बहो न निज नद हिये ते॥
सहो मनोज ओज सब रोजहिं चौज समुझि कछु छीये ते।
युगलअनन्यशरन सुमिरन विन वेहतर मरना जीये ते ॥१८॥
चढ़त चटाक चाक चितवनि चित चमक चाल चष चोरे रे।
ताते रहु हुसयार अव सुस्त भये विष घोरे रे॥
मीठी मीठी बातें कहि कहि कठिन नेह रजु जोरे रे।
युगलअनन्यशरन आषिर तिय सिय पिय शुभ गुन तोरे रे ॥१६॥
दगावाज ठग चोर कृतघ्नी सव औगुन तिय अंदर है।
दुराचार भव भार रहन हित सव प्रकार गिरि मंदर है॥
जे अजान कामी तिनको नित नचवत तिय सम वंदर है।
युगलअनन्यशरन जाके जिय तिय सनेह कटु कंदर है ॥२०॥
वड़ा अभाग दाग वाही सिर आग अजस अति भारी है।
काग छाग खर स्वान सरस पशु सो पूजित विभिचारी है॥
नाग समान वंधो वंधन जंजीर पैर विच धारी है।
युगलअनन्य खरावी तिसकी जिसकी रति नित नारी है ॥२१॥

हमने हरसायत तायत करि किया तिया गुन सावित है।
इसमें फंसे नहीं निकसे फिर इह सुजान जन जावित है॥
वामा विषय विलास विवरजित तिनको सब फन फावित है।
युगलअनन्यशरन सोई सुचि सागर आगर आवित है॥२२॥
कुशल अशल रस वशल सौक सुष मजा मसल मशहूरी।
होवे उसे मइस्सर हरदम लाशक कदम हजूरी॥
खाकी नापाकी तन तर करि पावत तन निज नूरी।
युगलअनन्यशरन बामा दिशि से जब होय सवूरी॥२३॥
सकल सुषन को षान शाह सुलतान विराग विराजे।
जाके तरफ निगाह नेक पल करें विशेष निवाजें॥
चौदह लोक शोक भासे तेहि परम प्रमोद सुछाजे।
युगलअनन्यशरन इह सम कहु कौन सकल सुष साजे॥२४॥
करि कपित्थ रवि नीर हीर विनु फलइ दारुनी कडुवा है।
देषत सरस निरस सबहीं विधि लगत खेत ज्यों मडुवा है॥
छोड़ि सियावल्लभ औरहिं रत ते मानहु पशु पडुवा है।
युगलअनन्यशरन राघव भजु जग ठग भूरी लडुवा है॥२५॥
ओस बूंद बादर छाया घन सरद व्योम रंग जैसे।
धूम धाम गंधर्व नगर नलनी दल गत जल तैसे॥
नीर तरंग रंग हरदी खल प्रीत तड़ित दुति वैसे।
युगलअनन्यशरन संपति तन संवंधी सुष ऐसे॥२६॥
सीप शिंधु जिमि रहत परस विनु वड़वानल जल सोषे।
कमल अमल जल परस रहित तिमि सज्जन जगत अदोषे॥

महा मूढ़ मति मंद मलिन मन विषयी निज गति धोवे।
युगलअनन्यशरन संसृति सुष सहित अधम दुष पोषे ॥२७॥
हाय पाय कमनीय कृपा प्रीतम प्रधान पट प्यारो।
सो विन वृक्ष वृथा वालिश मन विषय कंटकनि फारो॥
जेहि वर वसन मिलन कारन जप योग यज्ञ श्रम भारो।
युगलअनन्यशरन कृतहन पर वार वार धिकारो ॥२८॥
ठसक विराग धरे वाहर वहु भीतर चाह चमारी है।
कौनी भाँति रीझिहैं प्रीतम निरखि बाम विभिचारी है॥
अन्तर्यामी इष्ट धूतने योग कुयुक्ति बिचारी है।
युगअनन्य सांचे दिल पर नित खुस श्रीअवध विहारी है ॥२९॥
वृथा विलोकत वाम घाम घुन घात कुनात कतारी है।
भजन भाव भासन भावन भल सोषन वारी नारी है॥
चारो तरफ मोह माती छाई जेहि तन अँधियारी है।
युगलअनन्यशरन सीतापति शरन सहित उजियारी है ॥३०॥
जौ लौं ललना लहर जहर नहिं चढ़त तबहिं लौं सांचा।
प्रमदा अंग परसि पुनि निशदिन वढ़त मदन ज्वर आंचा॥
जैसे वने तैसेहीं सब विधि चहिये तिय दिशि बांचा।
युगलअनन्यशरन नाहीं तो फिर चौराशी नांचा ॥३१॥
देषत रहो सदा प्रमदा दिल अंदर दोष विचारी।
भूलेहूँ रमनीय बुद्धि नहिं कीजे अनहित धारी॥
जपा करो अजपा विराग वर सतगुरु शरन सम्हारी।
युगलअनन्यशरन नामी सतसंग रंग अवधारी ॥३२॥

निज जननी जग वाम भेद कहो कौन विवेक विचारे।
एक स्वरूप सकल लच्छन गुन केवल नैन निहारे॥
हाय जौन थल सें निकस्यो सठ तेहि सन विषय विकारे।
युगलअनन्यशरन थन पीवत पुनि मरदत मति मारे ।३३॥
महा शरम संकोच बात इह पांच न सोंच रचावै।
विना विचार विकार बटोरत तोरत सुगुन सोहावै॥
बोरत लोक उभय विषयी निधि अविधि रीति चित छावै।
युगलअनन्यशरन सीतावर संतशरन नहिं आवै ॥३४॥
वामा बन विष विशिष विषय वहु सदन अदन हित हेरी है।
मदन महा मद रदन वदन धौं कठिन काल कलि केरी है॥
कदन काम अभिराम मनोहर मोद सदन पग वेरी है।
युगलअनन्यशरन अति शंकित भजन तार तुक फेरी है ॥३५॥
बचे विवेकी बिमल वस्तु बल वामा बदन न देषें।
महा काल विष रूप व्याल ज्वाला जवाल तिय लेषें॥
श्रीसीता सुष देन शरन गहि अहंकार गत रेषें।
युगलअनन्यशरन सतसंगति प्रवल पाय सुष सेषें ॥३६॥
जो प्रमदा संबंध लग्यो कछु तौं विरक्तता फीकी है।
विन मारे मनोज वैरी मद बिरति दशा क्या नीकी है॥
पहिरे पंथ पड़े पट गुदरी करवाकर रुचि तीकी है।
युगलअनन्यशरन अनरथ सव विना विराग अठीकी है ॥३७॥
निषिल काम ते होत न जौ लौं निज निर्वेद विशाला।
तौ लौं वेष अशेष नकल सम जिमि जल विन नद ताला॥

योगी नट बाजीगर सिध सब वक्तापन जग जाला।
युगलअनन्यशरन विराग विनु सकल साधना साला ॥३८॥
ज्ञानी सबल लबार राग बिन जीते वदत सुजाना ।
कवि गन भाट समान नर्त्तकी नटुवा विषय लोभाना ॥
गायक सकल कलामत कत्थक विना विराग विधाना ।
प्रेमीहूँ बावर विराग विनु युगलअनन्य पछाना ॥ ३९ ॥
काहू भांति जगत की इच्छा मानस रहन न दीजे ।
उत्तम विमल विराग धारि दिल नाम रसायन पीजे ॥
कथनी कथि मनसिज मन मद मथि संत पादतल मीजे।
युगलअनन्य शरन सीतापति सहजहिं आप पसीजे ॥ ४० ॥
उलफ़त फ़क़त फ़हम वालों से मुझे हमेश किफ़ायत ।
साहनशाह दाह के माफ़िक दानिस्तम हरसायत ॥
खाहिश खलक रही नहिं तिल भर किया शफ़ीक किनायत।
युगलानन्य शरन लाशक अब पाया जाय हिमायत ॥ ४१ ॥
धन्य सुमंत विराग बिमल बल पाय जहान जलाये हैं ।
विधि वैभव विलोकि तृन विटसम वमन मदादि मलाये हैं॥
जाके बस अग जग ऐसो चित तेहि छल नाहिं छलाये हैं।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर अपना अदल चलाये हैं ॥ ४२ ॥
ऊपर फटी गूदरी पहिरत भीतर प्रिय पट पावन है ।
बाहर रुच्छ असन अंतर भल भोजन रस मन भावन है ॥
जाहिर मलिन वपुष कीन्हे पुनि अंदर अमल सोहावन है।
युगलअनन्य विरागमान रशिकनकी गति छवि छावनहै ॥४३॥

रोग शोग सम वित्त बिलोकत बिरति बिचित्र बिहारी ।
द्वादशधा वैराग्य फलित फल फूल रही फुलवारी ॥
महा मोद मदमाती अद्भुत दशा सुनैन खुमारी ।
युगलअनन्य शरन निर्मल निर्वेद सुपथ सुषकारी ॥४४॥
चार हेतु वैराग्य बीच बरबिज्ञ बिमल बिधि बरनी है ।
सकल दृश्य बैभव अंतर मति तुच्छ अरमनी करनी है ॥
नाशमान दुषप्रद सद्‌गुन सें बिमुष करन जिय जरनी है।
युगलअनन्य बिचारत सत मत होत भवांबुध तरनी है ॥ ४५ ॥
वार वार धिक धिक तापर जो जाने जगत सोहावन।
तेहि समान को अधम मलायन पाप ताप पर चावन ॥
अंत आदि तिमि मध्य खेद जेहि बीच भने जन पावन ।
युगलअनन्यशरन विराग करु समुझि जहान भयावन ॥४६॥
नीर वुद वुदा वीच वृथा व्यवहार विहार सजाते हौ ।
विनशत लगत न वार आखरी खेह खराबी खाते हौ ॥
घन छाया मगलीक पीक प्रतिबिंब विश्व क्या राते हौ ।
युगलअनन्यशरन विराग बिन वार वार पछताते हौ ॥४७॥
ललना रत गति मति हिंसक दुर्ल्लभ वर बात विचारो तो ।
मत्सर सहित नीच नरको कहुं लेश विभूती धारो तो ॥
संत शास्त्र निंदा रत को प्रभु प्राप्ति कभी निरधारो तो ।
युगलअनन्य विराग बिना निज आतम केहि विधि तारो तो ॥४८॥
जगत जाल रस रज्जु रच्यो मन व्याध फँसावन वारो ।
चूगा चाव चखा पचरित चष चंचल गहत गँवारो ॥

जीव विहंग बँधे घूमत दर दर दुष दारुन दारो।
युगलअनन्य सिया वल्लभ विनु कौन छोड़ावन हारो ॥४९॥
लोभ कुंभ के बीच विषय दाना धरि चित्त उपाधी।
ताके अशन हेत डारत जड़ जीव कीश कर बाधी॥
मूठी मोह न षोल शकत तेहि बीच बँधत अपराधी।
युगलअनन्यशरन नाचत घर घर छन छन दुष आधी ॥५०॥
नलनी शुक कृमि कोश यथा बक लटकत नरिअर मांही।
बांधे बिना बँधत व्याकुल बहु होत हाय हिय दाही॥
ऐसेही माया प्रपंच मधि भूलि रहे छल छांही।
युगलअनन्यशरन नालायक अंत भले पछताहीं ॥५१॥
जागु जागु जड़ जीव पीव पथ पेषि परम पद पावो।
क्या सोवो सुष स्वाद आद निज निरषि अधिक पछतावो॥
है तेरो कोई नाहीं इत कासें प्रीति रचावो।
युगलअनन्य विराग करो अब वेर वृथा हीं लावो॥५२॥
जननी जनक तनय बनिता सब सठ स्वारथी सनेही।
दिनाचार मिलि बैठि साथ तब विविधि विनोद सवेहीं।
जेहि छन हंस पयान कियो पुनि निकट न आवत गेही॥
युगलअनन्यशरन सब तजु भजु श्रीरघुवर वैदेही ॥५३॥
सपन समान जहान भान सब समुझि हान क्यों करते हौ।
पंथ सराय वास साथी तरनी सम लषि क्या मरते हौ॥
कठिन चोट खर खोट दूत यम तिनसें रती न डरते हौ।
युगलअनन्य विराग विना फिरि फिरि चौराशी भरते हौ॥५४॥

राज साज कुछ काज नहीं तेहि समय कहो को साथी हैं।
माल खजाना लशकर सबहीं जेते घोड़े हाथी हैं॥
जहाँ तलक जिलश्रा तेरा सो सबहीं तौर प्रमाथी हैं।
युगलअनन्य सचेत हूजिये तन लोहार की भाथी है॥५५॥
हाय करार कौन कीने तैं उदर बीच अब भूले हौ।
ऊरध पग मस्तक नीचे खल खूब भूलना भूले हौ॥
वाही समय खेद नाना सहि भजन सुनाम कबूले हौ।
युगलअनन्य बिसारि बात अब किस ऊपर तुम फूले हौ॥५६॥
ईश प्रसंस अंश कहवाकर क्यों कीचट में चिपटे हौ।
संत शास्त्र श्रुति वचन श्रवन विन किये लोभ लगि लिपटे हौ॥
चतुर सुजान आपको मानो मत मत मूरष निपटे हौ।
युगलअनन्य विराग भजन विन कहो कौन विधि निबटे हौ॥५७॥
जीवन स्वल्प तल्प काया में कल्प विकल्प विचारोगे।
हाय निकाय जाय तीनो तम ताप सुनैन निहारोगे॥
सांचो सही सुजन तुम सब परपंच न जो धिय धारोगे।
युगलअनन्यशरन तरिके पुनि अखिल जीव जड़ तारोगे॥५८॥
नाहक गुन गफ़लत के अंदर बहे बहाये जाते हौ।
बाहक बरद समान होय निज रूप तरफ़ नहिं आते हौ॥
लाहक सरह शबील ठील तिस मारग मांझ कमाते हौ।
युगलअनन्यशरन विवेक विन वेशक गोता षाते हौ॥५९॥
करुनाकर उदार चूड़ामनि मानव तन निज नीका।
निरहेतुक निज कृपा ओर सें दीन्हीं अतिही अलीका॥

ऐसो चमत्कार मानिक सठ खोय दियो गुनि फीका।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर तऊ दया सिय पीका ॥६०॥
चर्म देह द्विज दाह दाग दिल दूर हेतु श्रुति वानी।
ईश स्वरूप अनूप प्रकाशक नाशक गरम गलानी॥
तेहि तन तुच्छ समुझि वराटिका कारन श्रम सठ ठानी।
युगलअनन्यशरन मन वच क्रम भज्यो न सारंग पानी ॥६१॥
अमर भूमिसुर रिषिहुँ भये नहिं काज सरत तिहुँ काला।
बहुत वस्तु विज्ञान वेद प्रिय पढ़त योग जप माला॥
औरहुं साधन अमित किये नहिं रीझत श्रीनृप लाला।
युगलअनन्यशरन जौ लौ दृढ़ विरति न भजन रसाला ॥६२॥
चौदह भुवन फिरयो फाँकत रज विष्णु लोक लौं जाई।
पतन भयो नहिं वस्यो एक रस अचल विषाद विहाई॥
समुझयो तृगुन अतीत रीत नहिं तेहि हित मति भ्रम छाई।
युगलअनन्यशरन सीतावर रहस विमुख पछताई ॥६३॥
होत विषय ते पोष तोष नहिं कोटि कलप चलि जावै।
जैसे अनल वढ़त सरपी संग विदित बात जग छावै॥
यथा ताप में वारि रुचत नहिं होत तृप्ति ललचावै।
युगलअनन्यशरन ताते त्यागे सुप्रमोद बढ़ावै ॥६४॥
आज कल परखत हरषत हिय काल कलेऊ होता है।
मानहुं मिली अमर सरखत सठ पाँव पसारे शोता है॥
तोसे सकल भांति निर्मल मति पच्छी मैना तोता है।
युगलअनन्यशरन सियवल्लभ भजन हीन दिन खोता है ॥६४॥

अमित अपार सेन साजे तर ताजे तुरग कतारे हैं ।
मत्त मतंग उमंग भरे बहु भांतिन जाहि निहारे हैं ॥
औरहुं साज समाज सरस सुरराज सहस सम धारे हैं ।
युगलअनन्य विराग भजन बिनु अंतक भवन पधारे हैं ॥६६॥
सहसबाहु मंवल हिरनाकश्यप तिमि हाटक लोचन ।
मधु कैटभ मुर रावनादि सब पड़े काल संकोचन ॥
तोसे छन भंगुर तन जन धन पाप मान नहिं मोचन ।
युगलअनन्यशरन तोको पल पल प्रति चाहिय सोचन ॥६७॥
देवराज छिति नरन राज गंधर्वराज कहवायो ।
नागराज उडगन राजा पुनि धर्मराज पद पायो ॥
पंडितराज गुनी राजा ह्वै जहाँ तहाँ ठहकायो ।
युगलअनन्यशरन सतगुरु मिलि रघुकुलराज न भायो ॥ ६८ ॥
चौराशी लख योनि जाल विकराल बीच बहु बाध्यो ।
फिर्यो फजीहत कोटि सहित सठ सुख सपनेहुं नहिं लाध्यो ॥
निज स्वरूप मुद मोद मनोहर तीन ताप में दाध्यो ।
युगलअनन्यशरन सीतावर नाम न नेक अराध्यो ॥ ६९ ॥
नाहक नीर नेह हम तुम मधि मगन होत बिन जाने ।
रंचक स्वाद दरस जामें नहिं बंचक फिरहि भुलाने ॥
तेहि हित होत मलीन रैन दिन सद मति संत बखाने ।
युगलअनन्य विराग विभव विन बहकत मनहुं दिवाने ॥ ७० ॥
चार वेद संहिता शास्त्र आगम पुराण मत पेखो ।
औरहुँ संत महंतन को सुचि अनुभव अमल परेखो ॥

विना विराग अदाग दाग दिल मिटत नहीं दृग देखो ।
युगलअनन्यशरण ताते तजि राग विराग विशेखो ॥ ७१ ॥
गाडर ढ़रनि जहान लखी हम धसत विवेक बिहाई ।
कारन मनन करत दुख सुष नहिं परंपरा उरलाई ॥
जिमि कोउ मूढ़ कूप पय पीवत सुरसरि तीर रहाई ।
युगलअनन्यशरन कुलकी गति कहे न छोड़ी जाई ॥ ७२ ॥
सांचे संत समीप जात सकुचात विशेष अभागे ।
मंत्र यंत्र कलि कपट रसायन तिनके पद अनुरागे ॥
तिय सुत वित परिवार बढ़े सोई जतन बीच लय लागे ।
युगलअनन्यशरन आखिर जम जूती सहत अदागे ॥७३॥
दुनियेदार फकीर यार हक पास कभी जो आते हैं ।
जरा निशस्तवाद घर घर की चरचा चटक चलाते हैं ॥
दौलत या फरजंद मंद मति मांगत शरम न लाते हैं ।
युगलअनन्यशरन संतो के दिल को आय सताते हैं ॥७४॥
सियवर सरस सनेह सने तिन तरफ ताकि हँसि बोलें ।
वृथा विविधि वेदना सहत तुम त्यागि सदन अनमोलें ॥
गृहपति द्वार भीष मांगत नित डोलत दर दर टोलें ।
युगलअनन्यशरन ऐसे सठ वचन भयानक खोलें ॥७५॥
उचित विचारि चले चौगुन चित चाह उछाह बढ़ाये ।
दुचित पनो सपनो समान तकि तीन तरंग कढ़ाये ॥
सुचित समेत निकेत विरति वर वसे सुचैन चढ़ाये ।
युगलअनन्य रुचित राघव गुन सुमिरन नाम पढ़ाये ॥७६॥

अचल अचाह अदाह रहो नित शाह सुराह सुचाये।
मधुर माँह मुख मिलन आह हरसायत हृदे रुचाये॥
विविधि विकार असार सुतृन रस रहित निचिंत नुचाये।
युगलअनन्यशरन विराग वर भूमि हमेश सिंचाये॥७७॥
काल कराल व्याल मुख अंतर अग जग सकल समावेंगे।
वड़े वड़े वर वीर धीर रिषि तापस वचन न पावेंगे॥
औरन की कहो कौन कथा विधि हरि हर दृष्टि न आवेंगे।
युगलअनन्यशरन मूरख मन विना नाम पछतावेंगे॥७८॥
कठिन काल की गाज सुनत व्रह्मादि देवता हलते हैं।
सिंधु सुमेर सदृश जेते गंभीर धीर सोउ चलते हैं॥
किसहीं की कुछ कला लगे नहिं हाय हथेली मलते हैं।
युगलअनन्य विरागवान जन धाम मांझ पदु पलते हैं ७९॥
महा प्रलय के मांझ शूर शशि भू में गिर गिर पड़ते हैं।
हाहाकार होत दशहूँ दिशि मेरु आदि कुल कटते हैं॥
बड़े बड़े दिग्गज दिगीश सब तरु समान थल पटते हैं।
युगलअनन्य विरागवान घर उस दिन नौवत झड़ते हैं॥८०॥
पल भर विलंब नहीं प्यारे इह तन तुशार गल जावेगा।
मन की मनहीं मांह रहे जमपुर में जूती खावेगा॥
चेत अरे नादान नीच नर फेर न औसर पावेगा।
युगलअनन्य विराग भजन विन दुष की छानी छावेगा॥८१॥
विशद विरति वर बीज वोध सुख सोध निरोध नेहायत है।
इसी वासते वेद विमलवर वाक कुरानी आयत है॥

जब ताँई खाहिस खातिर अंदर तब तक क्या तायत है ।
युगलअनन्यशरन खुश खिलवत मुरशिद मधुर इनायत है ॥८२॥
प्रीतम प्रान समान आपने मांह विरति रुचि राषोगे ।
प्रभु प्रतिकूल शूल कारज कुल कालकूट सम नाषोगे ॥
सुधा सहस सम स्वाद सार सुष चसकि चसकि चिर चाषोगे ।
युगलअनन्यशरन सियवर गुन अनुभव अमल सुभाषोगे ॥८३॥
धीरज धारि रहो निश दिन इत उत केहि कारन भटको हौ ।
जठर मांझ प्रतिपाल करी तेहि भूलि असत थल अटको हौ ॥
अग जग जीव जौन पोषे नित पेट निमित क्यों खटको हौ ।
युगलअनन्यशरन सत मत सुनि वृथा खेद हित चटकोहौ ॥८४॥
परम कृपाल प्रनत पालक पन श्रीरघुनायक स्वामी का ।
निरहेतुकी दया दीनन पर तासन निमक हरामी का ॥
कोल किरात कपिन के दिशि लखु लेश रहस अनुगामी का ।
युगलअनन्य ऐसेहुँ पर दृढ़ आस रहित वदनामी का ॥ ८५ ॥
विना विमल विश्वास वैन बहु बकन वृथाहीं वालिश है ।
जैसे धन जन सांच हीन नालायक नर निज नालिश है ॥
कौन नफा कोयले दलाली वीच सुस्याही मालिश है ।
युगलअनन्य विराग भजन सतसंग सहित सुष चालिशहै ॥८६॥
कोटिन संकट परे शीश तउ ईश न दूजो जानो ।
पातिव्रत दृढ़ हृदय मनन करि अपर देव ना मानो ॥
आसा सबल सीयवल्लभ को आन भावना भानो ।
युगलअनन्यशरन वेगम रहि विरति रहस रति सानो ॥ ८७ ॥

लघु दीरघ जेते त्रिभुवन मधि मीत निगाह निहारो ।
तेते पराधीन सबहीं विधि दीन मलीन विचारो ॥
रंक निकट निज दरद व्यथा बकि कौन स्वाद निरधारो ।
युगलअनन्यशरन सियवर बिनु अखिल आस बनबारो ॥ ८८ ॥
होय रह्यो अलमस्त राम सिय सबल भरोशा धारी ।
योग क्षेम अनयास भली विधि करिहैं श्रीधनुधारी ॥
सरस स्वाद सुचि तोष गहे रहु सहु दुख सुष संसारी ।
युगलअनन्यशरन षटका बिन भजिये अवधबिहारी ॥ ८९ ॥
आलस किये अकाज सकल सुख समन कलंक कलाली ।
भजन भावना नास हांस रस भाजन महा मलाली ॥
युगल लोक शत शोक समाकुल दुख दूकान दलाली ।
युगलअनन्य तजे बिन आलस चढ़े न सियवर लाली ॥ ९० ॥
रूप रंग से रहित सहित दुख दारुन दाह विचारी ।
भजन भाव वर बीज विनाशक त्रासक कठिन कुदारी ॥
जम भगनी ठगनी संतन की काल फांस कर धारी ।
युगलअनन्यशरन उपाय दृढ़ करि तजु निद्रा नारी ॥९१॥
तौ लौ जीति सकत नहि नींदहिं तीहुं काल कोउ प्रानी ।
जौ लौ आसन अशन न साधत त्यागि लालसा जानी ॥
भजन नाम दिन रैन चैन बिन खिन पल विलग न वानी ।
युगलअनन्यशरन ताही पर रीझत सारंग पानी ॥९२॥
नींद निगोड़ी नीच मीच कलि कीच निंदने लायक है ।
यासे प्रीति प्रतीति सजावत विसरत सिय रघुनायक है ॥

तातें उचित हमेस भली विधि हठ सठ हेत सुभायक है ।
युगलअनन्यशरन मुद मारन निमित मानिये सायक है ।६३॥
विमल विराग विचित्र हेतु पुनि फल अरु अवधि सम्हारे ।
जीतमान वितरेक एकिन्द्री वशीकार निरधारे ॥
श्रीसतगुरु समीप बसिके वर विरति स्वरूप विचारे ।
युगलअनन्यशरन चारो जुत होहिं सुजन भव पारे ॥६४।
विषय बिषे वहु दोष सोष सुष समुझि हेतु दृढ़ कीन्हें ।
मान भान वैराग्य जनित अभिमान रहित परबीने ॥
चौदह भुवन विलास रास दुख देखि अवधि रस लीने ।
युगलअनन्य सुबस मन तन सोइ वशीकार गुन भीने ॥६५॥
क्रीड़ा मृग सम भये जंतु जड़ योषित जहर विलाशी ।
योग यज्ञ जप नेम मौन सब साधन असत विनाशी ।
केवल काम ईश सनमुख हर वदहिं विज्ञ सुखराशी ।
युगलअनन्यशरन छेमी सोइ जेहि तिय प्रीति उदाशी ॥६६॥
विश्वामित्र पराशरादि सौभरी महा मुनि मोहे ।
वामा कुटिल कटाक्ष वदन अवलोकि न तप दिशि जोहें ॥
औरहुँ धीर धुरीन भये बस नर पशु पांवर कोहें ।
युगलअनन्यशरन सिय वल्लभ केवल शरन तको है ॥६७॥
उधरत मदन समय पाये पर पाखंडिन को राजा है ।
वामा वदन विलास मनहुं इह सेन चतुर विधि साजा है ॥
महा मलीन निशंक अंकमय निज मन माधि अंदाजा है ।
युगलअनन्य मनोज मथन विन दुर्लभ सुष रस राजा है ।६८॥

मान महान गुमान गनी गुन मद माते जग खोटे से।
शाहनशाह सलाह आह दम दाह उछाह सुमोटे से॥
हाजिर रहो सियावर आगे तव सब लायक ओटे से।
माने तो मूरष भली भाँति नाहीं तो मेरे सोंटे से॥९९॥
बड़ी बड़ाई पाई दुनिये बीच सदा विन चोटे से।
घड़ी घड़ी उत्साह हमेशे दुख दावा दिन लोटे से॥
खबरदार सुमिरो सीतावर तव शोभा सुख मोटे से।
माने तो मूरष भली बात नाहीं तो मेरे सोंटे से॥१००॥
हाय हाय दिन जाय जाय वर वदन वाय वे नाहक।
छाय छाय छल छीन हिये हरसायत तापत वाहक॥
गाय गाय विष वलित गीत अपुनीत अनीत निवाहक।
युगलअनन्य अघाय धाय पद गहे दीन जन चाहक॥१०१॥
चपला चमक झमक झांई जिमि पत्र नोक कन सोहैं।
करिवर कलभ काम कामिनि चित चोर सनेह विमोहैं॥
पल पल प्रलय होत आयुर्बल लखत न नीच अछोहैं।
युगलअनन्यशरन भच्छत नित काल न सूझत कोहैं॥१०२॥
जे पुरुषारथ हीन दीन मति पशु तिनते अति आछे।
तज्यो न जेहि परपंच पापमय कियो न जग सुष पाछे॥
दंभ दिमाग दाग दूरी करु कहा काछनी काछे।
युगलअनन्यशरन मूरख निर्वेद न निरमल वांछे॥१०३॥
सदग्रन्थन सतसंग सार भव भार भार में डारे।
लोक कदंब मोद भय प्रद लषि सपनेहुं दृष्टि न धारे॥

मन में मस्त रहे हरदम चित चाह दाह दिलदारे।
युगलअनन्यशरन वेशक आनंद हमेशे प्यारे ॥१०४॥
विना विराग फकीरी कच्ची सच्ची विरति वधाये।
जैसे नाक हीन सूरति वद सूरत लखत सुधाये॥
ज्यौं खेती विन नीर अफल धन हीन विवाह न धाये।
युगलअनन्यशरन पशु पंखी पलत न बिना सधाये ॥१०५॥
धिक धिक तेहि पर वार वार जेहि रुचत न विरति बिचारू।
विना विकल्प वसें संसृति सुख कसें रसे नहिं हारू॥
होय नहीं वेहोश विषय सुख समुझै भूत बजारू।
युगलअनन्यशरन निकसे नहिं तेल निचोरे वारू ॥१०६॥
वानी वर निर्वेद खेद तजि सदा सनेम विचारे।
जगत जाल विपरीत रीत सें मन मिलाव मत प्यारे॥
राजा रंक समान बंक मृदु सरल सुभाव सम्हारे।
युगलानन्यशरन गफलत विन प्रीतम प्रेम प्रचारे ॥१०७॥
सब साधन फल अशल सुभग निर्वेद वेद विद गावै।
आसा शेष रहे नाहीं भव भान वितान बहावै।
सावित क़दम धारि धीरज धरि सियवर सुजस समावै।
युगलअनन्यशरन तृष्णा तिल तिल करि दूरि दुरावै ॥१०८॥
देह असत्य अनित्य महा जड़ पंच तत्व कृत कायर है।
तामे सुष त्रयकाल असंभव सकल दोष दुष सायर है॥
शुद्ध स्वरूप अनूप ख्याल करि गहि वर विरति अकायर है।
युगलअनन्यशरन मंगल नित सुमिरत नाम सुदायर है ॥१०९॥

है क्या मौज अथाह अजायब विरति वान सतसंगी को।
जिनके दृगनि समीप वज्र धर तैसा रुतवा भंगी को॥
वे खाहिसी सजे तीनो विध अगम रंग रस रंगी को।
युगलअनन्यशरन तिनके सम सुषी कौन जग जंगी को॥११०॥
सत पुरुषों के संग रंग रस लाभ विराग विचारोगे।
और ठौर गुन गौर नहीं सिरमौर शरन अवधारोगे॥
निश दिन नीचापन अंतर धरि ऊँचापना विसारोगे।
युगलअनन्यशरन वेशक मन मान मोहव्वत मारोगे॥१११॥
सदा एक रस जात दिवस नहिं समुझिय सुवुध सयाने।
कवहूँ राज साज नाना विधि कवहूँ रंक अमाने॥
कवहूँ नगन बसन सुंदर कहुँ कवहूँ सदन उघाने।
युगलअनन्य दशा जग ठग लषि परषि सुशरन समाने॥११२॥
मौत विलंद द्वन्द गरजत सिर वाजत घड़ी न सूझे।
छन छन घटत वढ़त जानत जड़ देह खेह मधि जूझे॥
दुर्लभ नर तन अमर सुजाचहिं पाय सोऊ नहिं सुरझे।
युगलअनन्य विराग भजन विन जीवत शव सम मुरझे॥११३॥
दंभ खंभ अति प्रवल गड्यो उर फुर मत मति किमि दरसे।
विविधि विषय आरंभ अनुच्छन स्वच्छ सुरस नहिं परसे॥
करनी अलप जलप सागर सम अस मत लय सुष सरसे।
युगलअनन्यशरन सीतावर प्रेम बूंद नहिं बरसे॥११४॥
दंभ महान कलंक पंक कटु कंटक सम दुखदाई।
कष्ट कदंव सहे तौ भी नहिं निकसें हिय ते भाई॥

जो कोऊ निज बुधि बल ते तेहि काटे जतन जमाई।
युगलअनन्यशरन पांवर नर लपटत सुधि बिसराई ।।११५।।
जगत मांझ मानता वड़ी पै अंतर सब विधि खाली है।
केवल दंभ आस धारे दिल विश्व विमोहन चाली है ।।
मन में माल बाल पल पल कर बीच फिरे जप माली है।
युगलअनन्य न इस करतब सें मिलत राम वनमाली है ।।११६।।
जौ लौं जिय पाखंड चंड प्रिय हिय कलि कपट कसाई।
तौ लौं प्रान प्रधान प्रेम प्रिय मिलत न सिय रघुराई ।।
जैसे नीच बीच सज्जन सपनेहुं नहिं सजत सगाई।
युगलअनन्य अदंभ होय जन सियवर लेत रिझाई ।।११७।।
क्रोध विशद वर बोध अमीतरु मूल समेत प्रहारे।
सोध स्वरूप कूप मैं मम मधि डारत हिय नहिं हारे ।।
साधन सुभग सरोरुह बन कह हिम समान जड़ जारे।
युगलअनन्यशरन सतगुरु बल छमा सनाह संवारे ।। ११८ ।।
कोह समान द्रोह दूजो नहिं करत सांचहीं पेखो।
जो जन त्रे सिंधु दुस्तर तेहि गोपद बोड़त देखो ।।
जन्म समूह सुकृत पल अंतर हरत न परत निमेखो।
युगलअनन्य छमा धारन करि लीजे जीति न लेखो ।। ११९ ।।
लोभ गोभ जेहि हीय बढ़त तेहि अपर बात नहिं भावै।
छन छन छोभ उठाय हाय हिय सौंपत सुबुधि नसावै ।।
कोटिन अरब खरब पदुमन धन पाय न नेक अघावै।
युगलअनन्यशरन लालच सुत संग लिये डरपावै ।। १२० ।।

सोई सूर नूर नेही जौ लोभहिं चूर करावै।
धूर धूर विष बन बबूर सम समुझि जहान जरावै॥
नाशमान दुष षान संपदा नैनन निरखि बरावै।
युगलअनन्यशरन सियवर भजि शुभ संतोष धरावै॥ १२१॥
मोह अखिल रुज तम उलूक चय चोर हेत निशि जानो।
सज्जन सरस सुवित्त ठगन हित ठग भूपति अनुमानो॥
विमल विराग कलित कुंजर ग्रसिवे हित ग्राह पछानो।
युगलअनन्यशरन सियवर गुरु कृपा कटाक्ष विहानो॥ १२२॥
रैन ऐन मन मैन गैन मधि विहरत जात चला है।
खबरदार नहिं होत अचेतन तन गुन रमन रला है॥
युगल अंग रस रंग भरो तेहि बीच सु रमत भला है।
युगलअनन्यशरन लाशक सुचि सेवक राम लला है॥१२३॥
वैन सैन निज नैन चैन चितवन मुद मैन कला है।
रैन ऐन रमि रह्यो तिनहि सन तन धन सुछल छला है॥
जिस चीजों का करत भरोसा तिसकी चली चला है।
युगलअनन्य भला तबहीं जब सुमिरे राम लला है॥१२४॥
सोचत पोच अपर तन धारिनि निज सुधि सकल भुलायो है।
रोचत रहस रीत वाना बहु भांतिन वेष बनायो है॥
मोचत मोह कोह सपने नहिं नोचत शशि सरसायो है।
युगलअनन्यशरन संकोचत आयुष अमल वितायो है॥१२५॥
अंतक संग चलत वैठत पुनि पौढ़त समन समेतहिं।
दीरघ भव मारग पारग सठ होत न वँध्यो निकेतहिं॥

बोलत हँसत बिहार करत सह काल कराल उपेतहिं ।
युगलअनन्यशरन नहिं सूझत श्याम केश सब सेतहिं ॥१२६॥
जरा जलूस जलद आई लाई दुष सघन अपारें ।
नश नश होय गये ढीले रस रहित रोग ललकारें ॥
चल्यो न जात बिना यष्टी कर कंपत हाय हजारें ।
युगलअनन्यशरन याहू पर भजत न राम पियारे ॥१२७॥
कठिन जरा की चोट कोट तरुनाई तुरितहिं तोड़यो है ।
मान गुमान शान सुंदरपन छिति समान कल कोड़यो है ॥
महा खेद तन स्वेद अमित निर्वेद हेत जन जोड़यो है ।
युगलअनन्य वुढ़ाई दुख निधि वुझि विज्ञ जन छोड़यो है ॥१२८।
तरुन अवस्था मांझ मनोहरता निज देखत डोले हौ ।
संत सुगुरु साहेब सज्जन सन मोछ मरोरत बोले हौ ॥
परधन तिय अपवाद निरत निश दिन मंगल गुन छोले हौ ।
युगलअनन्य लहो सो फल जेहि हेतु विषय विष घोले हौ । १२६॥
जीव अनीश ईश वशवरती संतत समुझ सयाने ।
काल कराल फांस से निश दिन कर्षत फिरत दिवाने ॥
इत उत ऊरध अरध गमन करि थकत न विषय समाने ।
युगलअनन्यशरन बहु बासर बीतेहुँ होश न आने ॥१३०॥
संचित सकल अवस्य एक दिन छीन होत श्रुति साषी ।
गये उतंग उमंग संग पुनि पतन अंत मन माषी ॥
योग बियोग युगल संगी लखु हरष शोक अभिलाषी ।
युगलअनन्यशरन जीवन को मरन समान सुभाषी ॥१३१॥

जैसे फल परिपक भये पर परत पुहुमि तजि साषा।
तैसेहीं जग जीव आव विन नष्ट होत को राषा॥
यथा सुधाम प्रवल थूनी बल जीरन भये सुनाषा।
युगलअनन्य सचेत हूजिये तजि प्रपंच अभिलाषा॥१३२।
रैन गई सो बहुरि न आवै देखु विवेक विचारी।
ज्यों यमुना नहिं फिरत शिंधु मिलि जतन किये बहु भारी॥
मानव देह तथा दुर्लभ इमि वदत संत श्रुति चारी।
युगलअनन्यशरन हुशयारी गहि भजु अवध विहारी॥१३३॥
चित चेतन विच चाह दाह कर जौ लौं रही हमारे।
तौ लौं अति लघुता मम अंदर गुरु सब विश्व विचारे॥
तृष्णा तरल तमी बीते पर सहज बड़ाई प्यारे।
युगलअनन्यशरन मीठा संतोष सुधा सब खारे॥१३४।
बीत्यो वय सविशेष शेष कछु रह्यो अवहुं नहिं जाग्यो।
विषय विकार विहार दंपती संपति संग रंग राग्यो॥
निरषि परषि हिय मध्य भली विधि भवन वास नहिं त्याग्यो।
युगलअनन्यशरन सियवर पद पदुम न पल अनुराग्यो॥१३५॥
पंडित महा महान मान मर्याद जहान विशेषी।
निगमागम पुरान सत मत पुनि पुस्तक अमित सुदेषी॥
तरल तमी तृष्णा तरुनी बस अचल न सुमति निमेषी।
युगलअनन्यशरन रघुवर वर भजन रहित सिर मेषी॥१३६॥
नेजा नाम नेह नूतन निज बरछी विरह अजूवाँ।
भाला भव्य भावना पिय हिय सत समशेर सुखूवाँ॥

ढाल विशाल गरीबी हरदम खांडा खौफ हबूबाँ ।
युगलअनन्यशरन सर सुंदर ध्यान नवल महबूबाँ ॥१३७॥
कसरत कार कमान अनूठी चढ़ी रहे नहिं उतरे ।
गुपती ज्ञान जान जीवन पहिचान सेल सुचि सुथरे ॥
कड़ावीन हुशयारी हरदम शरम तमंचा सचुरे ।
युगलअनन्यशरन समता वंदूक अनूपम कसुरे ॥१३८॥
धीरज अचल त्रिशूल शूल हर चक्र चाह चित धारे ।
गदा गम्य गुन गेय एक रस छन पल कबहुं न टारे ॥
तरक तमाम तोय गोला गुरु शब्द सनेह सुधारे ।
युगलअनन्यशरन सामा सब अद्भुत साज सँवारे ॥१३९॥
जो धारे हतियार यार सो जीते जंग जहाना ।
मारे महा मोह माया दल कलि मल कठिन निशाना ॥
हारे कभी नहीं सपने में निश्चै दृढ़ ब्रत बाना ।
युगलअनन्यशरन शंका तजि भजु सिय पिय पति प्राना ॥१४०॥
माता पिता पुत्र प्यारी नारी जे जगत सनेही हैं ।
तेते सब बंचक नालायक ठग मग नाशक येही हैं ॥
ऊपर मधुर बचन बोले बहु अंतर कपट निरेही है ।
युगलअनन्यशरन सतसंगति करत सफल नर देही है ॥१४१॥
श्रीगुरु पद पंकज प्रीतम सें जो वियोग करि डारे ।
महा प्रेत दुष हेत नीच निज अधम निकेत संवारे ॥
सुधा सार सतसंग छोड़ाकर विषय कुविष दै मारे ।
युगलअनन्यशरन तिनका नहिं वदन विलोकिय प्यारे ॥१४२॥

रहे हमेशे हुशियारी सें बचे तबहिं भल भाई।
चारों तरफ उपाधि आधि भव व्याधि बढ्यो अधिकाई॥
साबित रहे सूर भाई तब कादरपन छिटकाई।
युगलअनन्यशरन अटके नहिं जगत वचन दुषदाई॥१४३॥
क्या मतलब दुनियेदारी से जब हो गया फकीरा।
कौड़ी साथ काम उसको क्या मिला अशल जब हीरा॥
रंक संक तब कौन करे जब मिलन महीप अमीरा।
युगलअनन्यशरन हरदम अब अभय रहा करु थीरा॥१४४॥
पैदाइश जिसकी मिट्टी सें हुई मिले गिल सोई।
तख्त ताज तर राज साज सुष खाक गरक कुल होई॥
मादर पदर पिशर औरत तब संगी साथ न कोई।
युगलअनन्य सियावर सुमिरन हांशिल एक निकोई॥१४५॥
चार रोज की जगत चांदनी आषिर फेर अंधारी है।
वादर वीच विलास चित्र तिमि महल मौज भ्रम भारी है॥
आव हबूव शहर गंधरबी धूंवा सदन संवारी है।
युगलअनन्यशरन संपति सब ऐसेहिं झूम झमारी है॥१४६॥
घट सम सुघर जानु घर तन मन चना चाव चित चोत्रा।
पेट पाप के पेंच बीच सठ सुष स्वरूप निज षोवा॥
जगत जीव जंजाली जाहिर तिनहीं को मुख जोवा।
युगलअनन्यशरन साखा मृग सदृश विपत्ति समोवा॥१४७॥
चौराशी खेती के अंदर बीज वासना बोवा।
प्रभु प्रतिकूल वारि सें सिंचन करत वार बहु रोवा॥

फल अति समल खेद नाना विधि पाय अजा निशि सोवा ।
युगलअनन्य विराग विमल जल मांझ न मानस धोवा ॥१४८॥
वमन धूल मदिरा मशान तृन भूत दीप सम माने ।
रोग शोग प्रीतम वियोग अहि भोग भोग सब जाने ॥
हरिन नीर गंधर्व नगर विषधर रजु सम भ्रम भाने ।
युगलअनन्यशरन चेतन चित ह्वै निर्वेद समाने ॥१४९॥
ठग मग त्यागि साधु मारग गहि रे मन मूढ़ मलीना ।
पर निंदा अपवाद वाद वकि वृथा होत दिन दीना ॥
श्रवन सुनत औगुन अनेक पर कहा लाभ तैं लीना ।
युगलअनन्यशरन विराग जल मांझ करिय मन मीना ॥१५०॥
मीन पतंग कुरंग मतंग कुसंग रंग ललचाने ।
भृंग अनंग बान वेधित शब्दादिक बीच लोभाने ॥
ताते पंच बिषय रोके रहु संत संग पहिचाने ।
युगलअनन्य एक एकहिं से पांचहुं प्रान पयाने ॥१५१॥
जो पांचो सेवत विमोह बस सरस सिरोमनि मानी ।
तिनकी कौन कुदशा कहो किन भली भाँति अनुमानी ॥
ताते जतन जमाय निरंतर तजिये जाल जहानी ।
युगलअनन्यशरन सुमिरन से मिलिहैं श्रीधनुपानी ॥१५२॥
सांचो शुचि टकसार सोई निर्वेद निहायत नीको ।
जाके भये स्वभाविक हीं हो जाय विषय फल फीको ॥
अंतरंग बहिरंग वासना रहित सुरंग अमी को ।
युगलअनन्यशरन शंतत सुमिरन सुंदर सिय पी को ॥१५३॥

ऊँची दृष्टि सुधा रस पूरित श्रृष्टि तरफ़ नहिं हेरैं।
नीची नजर न होने पावे प्रीति परम पद नेरे॥
बसे रसे कटि कसे रहे तित जित हित चित दिन डेरे।
युगलअनन्यशरन विराग सजु भजु श्रीश्याम सवेरे॥ १५४॥
अब क्या गम दिल वीच रहा गति गहा गरूर गुमानी।
सबसे हला भला छोड़ा चित हित सजि सारंग पानी॥
निंदो या बंदो दिन दिन अनुराग हृदे अधिकानी।
युगलअनन्यशरन सियवर सन सुचि संवंध सजानी॥१५५॥
मुझे फकत महबूब अवध छविदार आसरा सांचा है।
और जहाँ तक लोक लोकपति जानि लियो कछु कांचा है॥
जो कुछु आय पड़े शिर पर सो सहिहौं सबहीं आंचा है।
युगलअनन्यशरन सिय वल्लभ बिना अनत नहिं यांचा है॥१५६
सीताराम पदारविन्द मृदु मधुर मरन्द सोहावन।
पीजे मन मधुकर निशदिन तजि विषय कुतरुन लोभावन॥
परमानन्द स्वाद अविनाशी जेहि लहि सतत सोधावन।
युगलअनन्यशरन पलहूँ भर जनि कीजे कहुं धावन॥१५७॥
अजपा जपत रहो अराग गुन सबहिं समाज विनंदी।
प्रथम विषय पुनि देह करन कुल मन मति चित दुष छंदी॥
अहंकार को खर्व समुझि तब पावे प्रमुद पसंदी।
युगलअनन्यशरन थोरे दिन बीच नसत भ्रम मंदी॥१५८॥
सब अभिमत दातार नृपति मनि अमल विराग विराजें।
जिनकी कलित कृपा कटाक्ष से सर्वोपर छवि छाजे॥

अंक संक कुल पंक रंक कृत गये भये सुख साजें ।
युगलानन्य विराग भजन बल निशदिन नौबत बाजे ॥१५६॥
करो कौन निर्वेद प्रशंसा मति अति तुच्छ हमांरी ।
जेहि गुन गनत गनप गिरिजा गुरु गिरा शेष त्रिपुरारी ॥
आप परेश होत जिनके बस वेद पुरान पुकारी ।
युगलअनन्यशरन दीजे वैराग्य विमल धनुधारी ॥१६०॥
दोहा–विरति कांति चित शांति प्रद, पूरक जन मन काम ।
करिय श्रवन पन ठानि नित, तजि कुसंग दुष धाम ॥

इति श्रीमधुर मंजुमालायां वैराग्य निरूपनं
नाम विरति कांति तृतीयः ।